Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & Colleg

ISSN : 2394-3580

VOLUME - 12 No. 11, Nov. -

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Peer Reviewed & Refereed Journal

g & Impact Factor E

Published by

Swadeshi Research Foundation Publication

Seva Path, 320 Sanjeevan

Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpu .) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	कौशल विकास में चुनौतियाँ और अवसर	रिखा कुमारी	1-5
2	श्रीहर्ष की अंलकार योजना एक समीक्षात्मक विवेचन	डॉ. देवेन्द्र प्रताप सिंह	6-9
3	तकनीकी शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव	डॉ. राजेन्द्र बौद्ध विनय कुमार सिंह	10-13
4	नृत्य में प्रयोग कितना जरूरी है	डॉ. शैली घोषे	14-15
5	रामचरितमानस में लोक–चेतना	डॉ. शगुन अग्रवाल	16-19
6	पंचायती राज : ई–शासन से सुशासन	राकेश कुमार चौधरी	20-21
7	नगरीय आधारभूत संरचना के विकास में लोक निजी भागीदारी: उभरते आयाम	यतेन्द्र सिंह चौधरी	22-24
8	आजमगढ़ जनपद (उ.प्र.) में शैक्षिक सुविधाओं की दशा एवं दिशा	शिक्षा राय डॉ. अजय कुमार चौहान	25-29
9	आदिम जाति बैगा पर मोबाइल फोन और सोशल मीडिया का प्रभाव (मंडला जिले के नारायणगंज विकासखंड के विशेष संदर्भ में)	डॉ. धीरेन्द्र पाठक दीपंकर राय	30-35
10	आशीष कंधवे की काव्य रचना 'कर्म धागा' का वर्ण्य–विषय : एक दृष्टि	संदीप कुमार	36-39
11	पूर्वी उत्तर प्रदेश में दलित जातियों की जनसांख्यिकीय विशेषतायें : एक भौगोलिक अध्ययन	यशपाल कन्नौजिया डॉ. चौथी सिंह यादव	40-48
12	हरियाणा में महिला विधायकों की अपने विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों में भागीदारी की स्थिति का एक अध्ययन	रवि सरोहा डॉ. सोनिका	49-53
13	भारत में प्रशासनिक सुधार के अंतर्गत लोकपाल व लोकायुक्तों के विभिन्न स्वरूप	डॉ. धीरेंद्र कुमार	54-63
14	अम्बेडकर नगर जनपद में जनसंख्या वितरण : एक भौगोलिक विश्लेषण	लालजीत यादव डॉ. मनोज कुमार सिंह	64-68

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary Research
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. - 12, No. – 1, November - 2024, Special Issue Hindi

2024

अम्बेडकर नगर जनपद में जनसंख्या वितरण : एक भौगोलिक विश्लेषण

लालजीत यादव
शोध छात्र, भूगोल विभाग, राजा हरपाल सिंह, स्नाकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ–जौनपुर (उ.प्र.)
डॉ. मनोज कुमार सिंह
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजा हरपाल सिंह स्नाकोत्तर महाविद्यालय, सिंगरामऊ–जौनपुर (उ.प्र.)

शोध सारांश :– क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में उस क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का सबसे अधिक योगदान होता है, लेकिन जब जनसंख्या क्षेत्र विशेष के लिए भार बनने लगती है, तब विभिन्न प्रकार की समस्याओं का उदय होता है। जनसंख्या विस्फोट से आज विश्व के कई देश प्रभावित हैं। जनसंख्या के निरन्तर बढ़ते दबाव के कारण गरीबी, खाद्य संकट, अशिक्षा, बेरोजगारी, भूमि संकुचन आदि समस्यायें जन्म लेती हैं। जनसंख्या के एक विशेष वर्ग को भले ही उत्तम प्रकार के भोजन प्राप्त हो रहा है, किन्तु एक बृहद जनसमुदाय अपनी मूलभूत आवश्यकता भोजन, वस्त्र और मकान से भी वंचित है। जनसंख्या की गुणोत्तर वृद्धि के कारण खाद्य पदार्थों की माँग निरन्तर बढ़ रही है, जिससे माँग एवं पूर्ति में असमानता होने से कई सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि समस्याएँ उभर कर सामने आ रही हैं। ये समस्याएँ स्थानीय स्तर पर, राष्ट्रीय स्तर पर एवं वैश्विक स्तर पर देखी जा सकती है। आज सम्पूर्ण विश्व मन्दी की दौर से गुजर रहा है, जिसके मूल में जमाखोरी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी जैसी अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ है। जनसंख्या वृद्धि विकासशील देशों की बड़ी समस्या समझी जाती थी, किन्तु विकसित राष्ट्र भी इस समस्या के शिकार हो रहे है, जैसे– जापान ने अपने देश की जनसंख्या को कम करने के लिए गर्भपात को कानूनन वैध करार देकर जनसंख्या नियत्रंण प्राप्त किया, परन्तु वृहद आकार वाले अल्प विकसित राष्ट्र भारत, इण्डोनेशिया, पाकिस्तान, बंग्लादेश आदि देशों में जहाँ जनसंख्या की समस्या अति विकट है, इस पर नियत्रण करने में अभी तक असमर्थ रहा है। इन देशों में संकुल जनसंख्या, वार्षिक वृद्धि दर तीव्र है तथा अशिक्षा अधिक है।

संकेत शब्द :– विकास, जनसंख्या, विकासशील, बेरोजगार, भष्टाचार, विश्व।

भूमिका :– जनसंख्या का अध्ययन प्राचीन काल से विभिन्न विद्वाना विशेषज्ञों एवं विचारको द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा है। जनसंख्या भूगोल को एक क्रमबद्ध विषय के रूप में मान्यता दिलाने तथा अन्य विषयों के समकक्ष प्रतिस्थापित करने का कार्य अमेरिकी भूगोलवेत्ता जी.टी. ट्रिवार्था ने किया। 1953 ई. में "ASSOCIATION OF AMERICAN GEOGRAPHERS" के सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण के दौरान ट्रिवार्था ने जनसंख्या के लिए ठोस तार्किक एवं आधारभूत सिद्धान्त प्रस्तुत करते हुए इसके पृथक स्वरूप निर्धारण किया गया और जनसंख्या भूगोल में शोधों का सूत्रपात हुआ। ट्रिवार्था के अनुसार जनसंख्या सन्दर्भ बिन्दु है, जिसके परिप्रेक्ष्य में घरातल के अन्य तत्वों की उपयोगिता का आकलन किया दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसमें जनसंख्या के वृद्धि की स्वाभाविक प्रक्रियों बताई गई है।

आधुनिक काल में बर्कल ने 1958 में जनसंख्या के विविध विधियों पर प्रकाश डाला। इसके अतिरिक्त थाम्पसन, चन्द्रशेखर, डेविस, शेखर मुखर्जी, एफ. जे. मांकहाउस, स्मिथ, एकरमैन, मैलेजीन, हेनरी, डी. आई, बैलेन्टी आदि ने जनसंख्या भूगोल को प्रतिस्थापित करने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। भूगोल में जीवन के गुणात्मक स्तर से सम्बन्धित अध्ययनों का सर्वथा अभाव खटकता है, क्योकि इसमें सामान्यतः वृद्धि एवं वितरण रो सम्बन्धित ही किया जाता रहा है। भूगोल में जब से कल्याण परक उपागम की प्रमुखता हो गई है, तब से गुणात्मक जीवन स्तर से सम्बन्धित अध्ययनों का भी महत्व बढ़ा है। विगत कुछ वर्षों में जनसंख्या का अध्ययन पर्यावरण एवं संविकास के सन्दर्भ में किया जाने लगा है। इस संदर्भ में एम. के० तोल्वा, जी. बर्नाड, ए. एन. अग्रवाल आदि विद्वानों का महत्त्वपूर्ण है।

जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययन में जन दबाव तथा उपयोगी भूमि संकुचन एक अत्यन्त ही चिन्तनीय विषय है। इस संदर्भ में भी अनेक विद्वानों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किए है। इसमें 1976 में प्रकाशित पीटर की पुस्तक डेमोग्राफी, थाम्पसन और डेविस की पुस्तक जनसंख्या समस्या आर.ए. दूबे की 1981 में प्रकाशित पुस्तक उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में भारत की जनसंख्या गत्यात्मकता, ओ.एस. श्रीवास्तव की 1983 में प्रकाशित पुस्तक ए टेस्ट बुक ऑफ डेमोग्राफी, जी०एस० गोसल तथा ए.बी. मुखर्जी की पुस्तक डिस्ट्रीब्यूशन एण्ड

रिलेटिव कन्सन्ट्रेशन ऑफ सिडयूल कॉस्ट पापुलेशन इन इण्डिया आदि ग्रन्थ मुख्य रूप से उल्लेखनीय है। इसके साथ ही साथ डॉ. के.एन. सिंह के निर्देशन में हरिशंकर लाल का शोध प्रबन्ध भारत नेपाल तराई के पारिस्थैतिक तन्त्र पर निर्वनीकरण का प्रभाव भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास है।

अध्ययन क्षेत्र :– इस जिले को फैजाबाद जिले से अलग करके बनाया गया है। अंबेडकर नगर जिला उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। अकबरपुर जिले का मुख्यालय है। कुशल प्रशासन प्रदान करने के लिए जिले को प्रशासनिक रूप से 05 तहसीलों में विभाजित किया गया है, जिनके नाम अकबरपुर, टांडा, जलालपुर, आलापुर और भीटी हैं। विकास कार्यों के क्रियान्वयन एवं निगरानी के लिए जिले के ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम पंचायत जहींगीरगंज, जलालपुर, मियांव, भीटी, कटेहरी एवं अकबरपुर शामिल हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 2350.0 वर्ग किलोमीटर है। ग्रामीण क्षेत्र 2255.1 वर्ग किलोमीटर तथा शहरी क्षेत्र 94.9 वर्ग किलोमीटर है। जिले में 786 ग्राम पंचायतें और 1750 राजस्व गांव हैं, जिनमें 1649 आबाद गांव और 101 गैर आबाद गांव हैं। शहरी क्षेत्र में 05 वैधानिक कस्बे और 02 जनगणना कस्बे हैं। वैधानिक कस्बों में 03 नगर पालिका परिषद और 02 नगर पंचायतें शामिल हैं।

अंबेडकरनगर जिला राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। संत कबीर नगर, बस्ती और गोरखपुर जिले के उत्तर में स्थित है। दक्षिण में सुल्तानपुर, पश्चिम में जिला फैजाबाद जिले और पूर्व में आजमगढ़ जिले से घिरा है। यह अक्षांश 26°9' और 26°50' उत्तर तथा देशांतर 81°40' और 83°8' पूर्व के बीच स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 2,357 वर्ग किमी है।

अवस्थिति मानचित्र

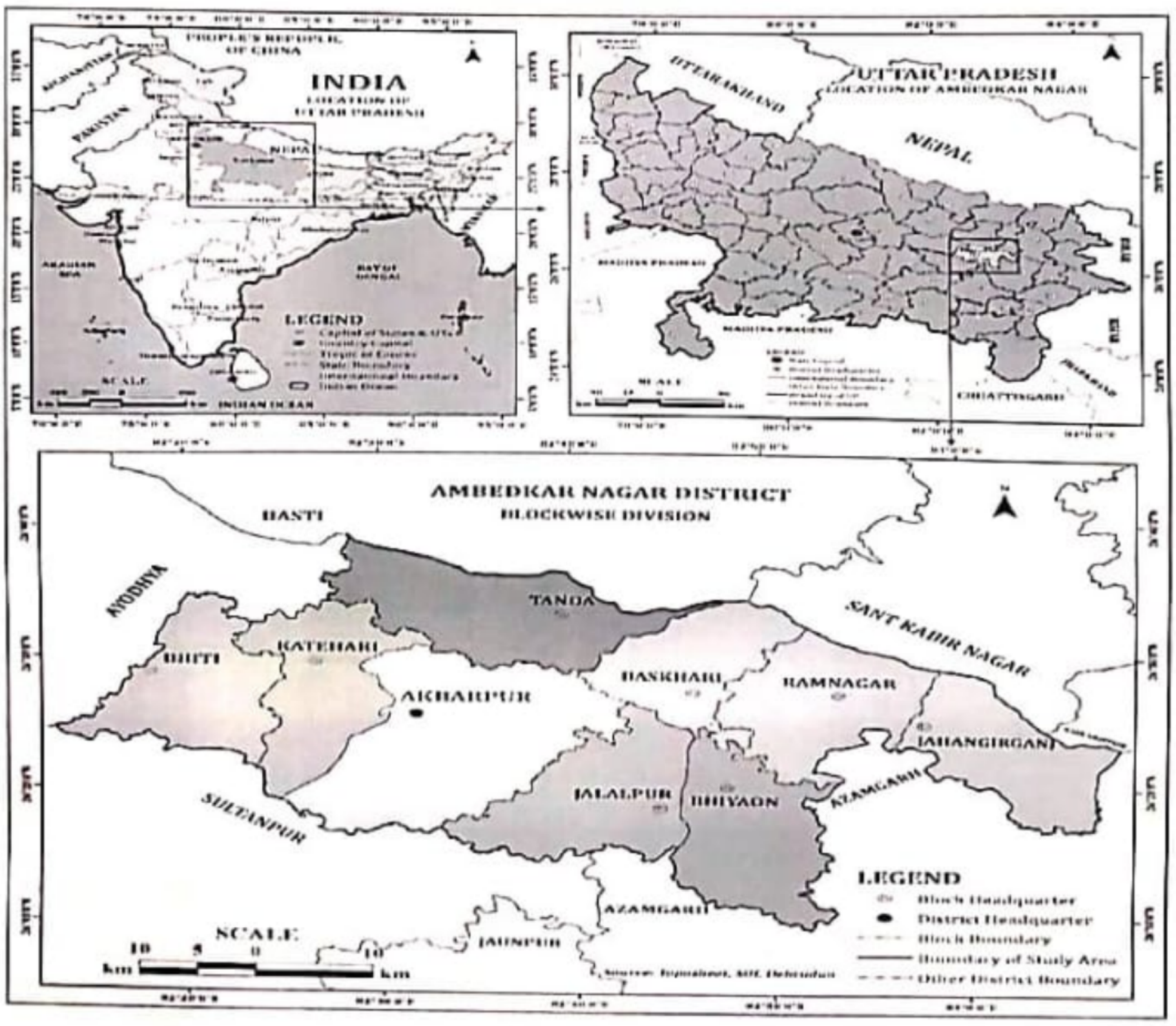

चित्र सं. – 1

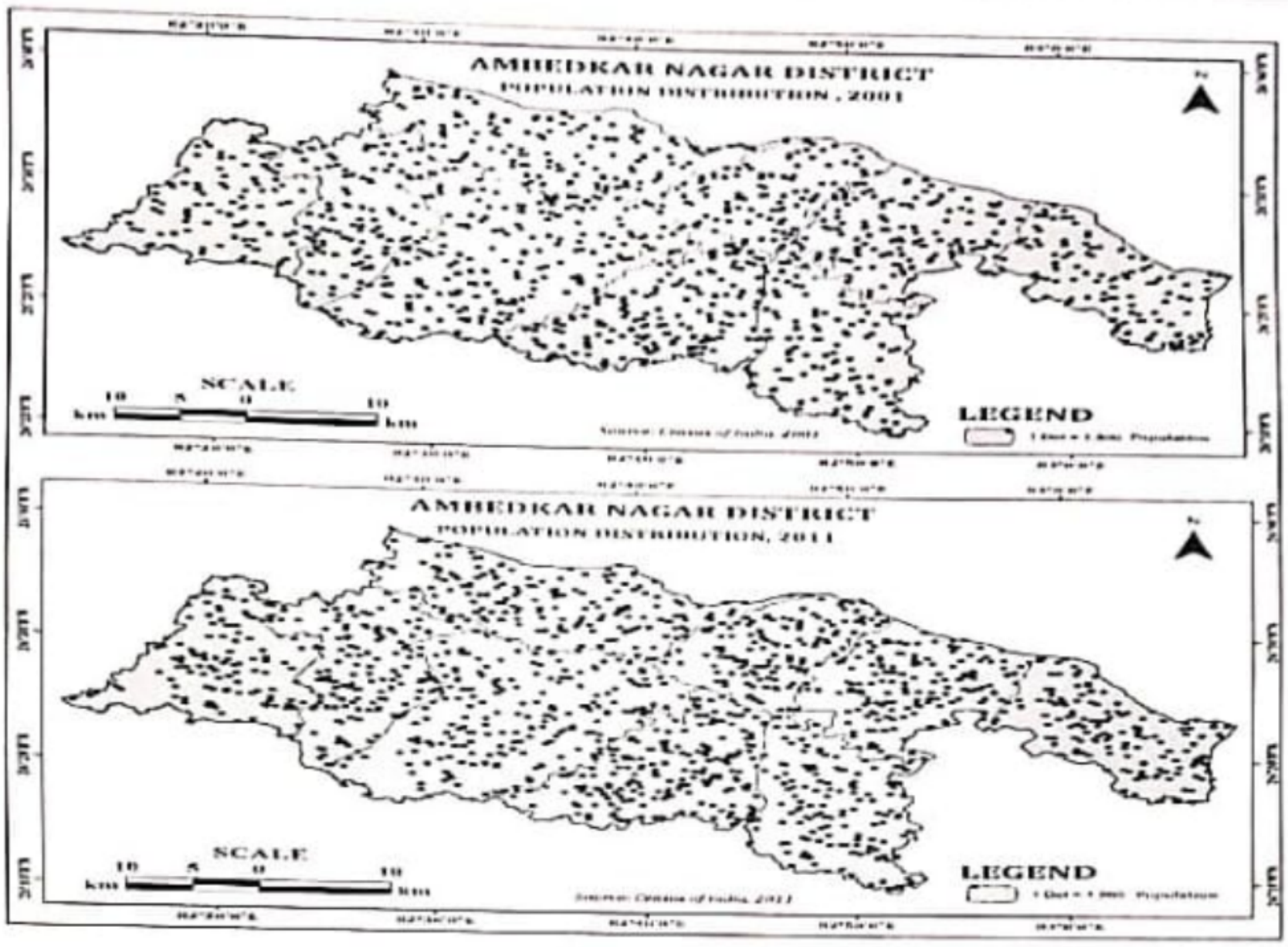

चित्र संख्या – 2

सारणी सख्या :– 2 अम्बेडकर नगर जनपद में जनसख्या वितरण का प्रतिशत सारणीयन श्रेणी के रूप में 2001।

क्र. स.	सारणीयन श्रेणी	विकासखण्डों की सख्या	विकासखण्डों का प्रतिशत	विकासखण्डों का नाम
1	अधिकतम (12.72 से अधिक)	1	15.39	अकबरपुर
2	मध्यग (12.72 से 10.05 के मध्य)	2	23.79	टांडा, जलालपुर
3	न्यूनतम (10.05 से कम)	6	51.87	मीटी, कटेहरी, बसखारी रामनगर जहांगीरगंज, भियाँव
योग ग्रामिण			91.05	
योग नगरीय			8.00	
योग जनपद			100	

श्रोत :– जिला जनगणना हस्तपुस्तिका, अम्बेडकर नगर (2001)

सारणी सख्या:– 3 अम्बेडकर नगर जनपद में जनसख्या वितरण का प्रतिशत सारणीयन श्रेणी के रूप में 2011

क्र. स.	सारणीयन श्रेणी	विकासखण्डों की सख्या	विकासखण्डों का प्रतिशत	विकासखण्डों का नाम
1	अधिकतम (10.72 से अधिक)	3	36.26	अकबरपुर टांडा, जलालपुर
2	मध्यग (8.9 से 10.72के मध्य)	3	27.09	कटेहरी, रामनगर जहांगीरगंज,
3	न्यूनतम (8.9 से कम)	3	24.09	मीटी, बसखारी भियाँव
योग ग्रामिण			88.26	
योग नगरीय			11.73	
कुल			100	

श्रोत :– जिला जनगणना हस्तपुस्तिका, अम्बेडकर नगर (2011)।

उद्देश्य – अम्बेडकर नगर जनपद के विकासखण्डवार जनसंख्या वितरण का अध्ययन करना।

विधि तंत्र – वर्तमान अध्ययन मे प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के आँकड़ो का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े व्यक्तिगत सर्वेक्षण तथा द्वितीयक आँकड़े डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अम्बेडकरनगर जनसंख्या सार संग्रह भाग अ एवं ब 1951 से 2011 तथा अर्थ एवं सख्या समग्र अधिकारी अम्बेडकरनगर द्वारा प्रकाशित सांख्यिकीय पत्रिका से प्रदत्त आँकड़ो का संग्रह किया गया है मानचित्र के लिए GIS (जी.आई एस) सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है।

अम्बेडकर नगर जनपद मे जनसंख्या वितरण :– जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का अध्ययन जनसंख्या भूगोल का महत्वपूर्ण पक्ष है। जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व आपस मे घनिष्ठतम् रूप से सम्बन्धित होता है। जनसंख्या वितरण से जहा जनसंख्या की स्थितिजन्य फैलाव का बोध होता है, वहीं जनसंख्या घनत्व से जनसंख्या का भूमि पर पड़ने वाले भार की जानकारी होती है। जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व से जहां एक तरफ जनसंख्या के धरातल पर फैलाव के प्रतिरूप एवं जनसंख्या के भूमि पर पड़ने वाले भार ज्ञात होता है, वहीं दूसरी तरफ जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व जनसंख्या के दूसरे पक्षों यथा जन्मदर, मृत्युदर, प्रव्रजन, लिंगानुपात, व्यावसायिक संरचना, आयु संरचना के स्वरूप के नियत्रक है। जनसंख्या के इस पक्ष के अध्ययन से किसी भी क्षेत्र या राष्ट्र के मानव संसाधन के आंकलन, सैन्य शक्ति के निर्धारण, आर्थिक एवं क्षेत्रीय विकास एवं राजनैतिक क्रिया–कलापों के समन्वय में सहायता मिलती है। जनसंख्या वितरण में जनसंख्या के यथार्थ स्थिति जन्य प्रारूप पर ही ध्यान दिया जाता है जैसा कि चौंदना ने स्पष्ट किया है कि "The term distribution refers to the way the people are spaced over the earth's surface & The emphasis is, thus, on the pattern of actual place locations of a population." मानव के इस विस्तार या प्रसार के आधार पर रेखीय या प्रकीर्ण, जनघट या पुंजीभूत वृत्ताकार या अर्धाकार व त्रिभुजाकार जनसंख्य वितरण प्रतिरूप उत्पन्न हो सकता है जिसमें इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है कि पृथ्वी के धरातल पर मानव कहाँ–कहाँ कितनी मात्रा में एवं किस रूप में फैले हुए है तथा मानव का प्रसार एवं फैलाव प्राकृतिक कारको द्वारा किस प्रकार नियंत्रित है

सारणी सख्या :– 1 अम्बेडकर नगर जनपद में विकासखण्डवार जनसख्या वितरण (प्रति वर्ग किमी.) तथा कुल जनसख्या परिवर्तन प्रतिशत में 2001 से 2011 तक।

क्र. स.	विकासखण्ड	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी.	कुल जनसंख्या 2001	कुल जनसख्या का प्रतिशत	कुल जनसंख्या 2011	कुल जनसख्या का प्रतिशत
1	मीटी	209.76	149681	7.38	169251	7.08
2	कटेहरी	253.33	179709	8.87	216398	9.05
3.	अकबरपुर	345.6	312049	15.39	300237	12.55
4	टांडा	312.73	226004	11.15	268393	11.22
5	बसखारी	204.57	169501	8.36	200610	8.39
6	रामनगर	322.8	196843	9.71	237832	9.94
7	जहांगीरगंज	219.44	181387	8.95	213122	8.91
8	जलालपुर	298	256175	12.64	298761	12.49
9	मियाँव	211.69	174434	8.60	206254	8.62
योग जनपद		2257.53	1845783	91.05	2110858	88.26
योग जनपद		92.47	181093	8.93	280730	11.73
योग जनपद		2350	2026876	100	2391588	100

स्रोतः– जनगणना हस्तपुस्तिका, जनपद अम्बेडकर नगर 2001 व 2011 की जनगणना पर आधारित।

अम्बेडकर नगर जनपद में 2001 से 2011 तक जनसाख्या वितरण का विश्लेषण :– जनपद में 2001 से 2011 तक के समयावधि में कुल 364712 जनसंख्या की वृद्धि हुई है। जो इस समयावधि में 15.24 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है 2001 में अधिकतम जनसंख्या अकबरपुर विकासखण्ड की है, जबकि 2011 में अधिकतम जनसख्या अकबरपुर टांडा, जलालपुर है वही 2001 में मध्यम श्रेणी में टांडा, जलालपुर ब्लाक है, जबकि 2011 में 3 ब्लाक (कटेहरी, रामनगर, जहांगीरगंज) मध्यम श्रेणी में है। 2001 में न्यूनतम श्रेणी की बात की जाय तो 6 ब्लाक (भीटी, कटहरी, बसवारी, रामनगर, जहागीरगंज, भियाँव) है। जबकि 2011 में न्यूनतम श्रेणी में 3 ब्लाक (भीटी, बसखारी, भियाँव) है।

निष्कर्ष :– जनपद अम्बेडकर नगर (2001) में उच्चतम श्रेणी में केवल एक ब्लाक अकबरपुर था। जबकि 2011 के उच्चतम श्रेणी में 3 ब्लाक आ गये। जैसे अकबरपुर, टौंडा जलालपुर। वहीं 2001 में मध्यम और निम्न श्रेणी में क्रमशः 2 और 6 ब्लाक है, जबकि 2011 के उच्चतम मध्यम निम्नतम श्रेणी में समान वितरण क्रमशः तीन–तीन ब्लाक है। जनपद में जनसंख्या वृद्धि 15 प्रतिशत हुई है। इसका मुख्य कारण उँची जन्मदर, गर्म जलवायु, विवाह की अनिवार्यता, धार्मिक अन्धविश्वास, शिक्षा का अभाव, परिवार नियोजन के प्रति उदासीनता आदि मुख्य कारण है। जो जनसंख्या वृद्धि में मुख्य भूमिका निभा रहें है।

जनपद को संतुलित विकास के लिए जनसंख्या नियत्रण करना आवश्यक है। इसके लिये स्वास्थ सुविधाओं का निस्तार हो लोगों में जागरूकता, शिक्षा का प्रसार, परिवार नियोजन के साधनों का प्रसार व प्रचार जीवन स्तर में सुधार इत्यादि के द्वारा जनसख्या वृद्धि में नियंत्रण करना आवश्यक है। क्योकि वर्तमान में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति बनी हुयी है जनपद में समान जनसख्या नितरण के लिए सरकारी प्रयासों व जनजागृति लाकर जनसंख्या नियंत्रण करके ही साधनों का उचित समान वितरण तथा जनपद में समग्र रूप से विकास करके ही जनपद के सभी विकासखण्डों में लगभग समान जनसंख्या वितरण को सुनिश्चित किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. चौंदना, आर.सी. (2014) जनसख्या भूगोल, कल्याण पब्लिकेशस नई दिल्ला, पृष्ठ 242।
2. मौर्य, एस.डी. (2016) जनसंख्या भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 74,339।
3. सिंह, जगदीश (2017) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ 93–941।
4. भारत सरकार भारत की जनगणना, जनगणना भवन, लखनऊ।
5. बंसल सुरेश चन्द्र (2015) सांख्यिकी एवं शोध विधि तन्त्र, आर. के. बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 201।
6. तिवारी, राजेन्द्र (2011) सांख्यकीय डायरी, उत्तर प्रदेश अर्थ एवं संख्या प्रयोग, राज्य नियोजन संस्थान, उत्तर प्रदेश।
7. हीरालाल, जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर 1993।
8. दूबे कमलाकान्त एवं सिंह महेन्द्र बहादुर, जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेशन, 1994।
9. ओझा, रघुनाथ, जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर चतुर्थ संस्करण।
10. धर्मेन्द्र, वी०आर०, जनसंख्या विस्फोट एवं पर्यावरण प्रदूषण, अनिल प्रकाशन दिल्ली, 2002।
11. Momoria, C.B. India's Population Problems, Kitab Mahal Pvt. Ltd. Allahabad 1981.
12. Shafi, M, Food Production Efficiency & Nutrition in india Geography 1967- Siddiqui. F.A. Regional Analysis of Population Structure: A Study of U.P.
13. (India)Concept Publishing Company New Delhi 1984-
14. Singh, K.N., & D.N., Population Growth Environment and Development Study Center Varanasi 1991.
15. Thompson, W.S.& Lewis, D.T. Population Problems, Tata Mc Graw Hill Publishing Co. Ltd, New Delhi.